आ रही रवि की सवारी

रचनाकार : हरिवंशराय ‘बच्चन’

गतिविधि:-

आंखें बंद कर यह आवाज सुनेगें: (छात्रों को यहाँ चिड़ियों का चहचहाना.. और सुबह के भाव को निर्माण करने वाला संगीत को सुनाया जाएगा|)

यह संगीत आपको कैसा लगा? संगीत सुनकर आपके मन में सर्वप्रथम कौन सी प्रतिक्रिया उभरी?

प्रस्तावना:-

दिन-भर का सबसे सुहावना समय होता है... सुबह का समय, चिड़िया के चहचहाने की आवाज, सुबह की ठंडी-ठंडी पवन मन में उमंगों को भर देती है | हम नए उत्साह से भर जाते हैं...

सिर्फ हम मानव ही नहीं अपितु पेड़-पौधे भी सूर्योदय का आनन्द मनाते हैं..

हमारी पृथ्वी पर जीवन सूर्य के कारण ही है...

प्राचीन काल से अब तक सूर्य ने कवियों को अपनी ओर आकृष्ट किया है | ऋग्वेद काल से अब तक कवियों की लेखनी सूर्य का और सुबह का वर्णन करते नहीं थकती है |

बच्चों आज हम हरिवंशराय बच्चन द्वारा रचित सुबह का वर्णन करने वाली कविता पढने वाले हैं |

कविता- पठन शुरू करने से पहले चलिए हम हरिवंशराय बच्चन के बारे में थोड़ा जान लें-

कवि परिचय:-

हरिवंश राय श्रीवास्तव "बच्चन" (२७ नवम्बर १९०७ – १८ जनवरी २००३) हिन्दी भाषा के एक कवि और लेखक थे।'हालावाद' के प्रवर्तक बच्चन जी हिन्दी कविता के उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों मे से एक हैं। उनकी सबसे प्रसिद्ध कृति मधुशाला है। वह भारतीय फिल्म उद्योग के प्रख्यात अभिनेता अमिताभ बच्चन के पिता भी हैं।

अपने बारे में बताते हुए हरिवंशरायजी कहते हैं:-

“मिट्टी का तन, मस्ती का मन, क्षण भर जीवन, मेरा परिचय...”

साहित्य में ही यह संभव है कि लोगों के लड़खड़ाते कदमों के लिए जिसे कोसा जाता हो, उसमें भी एकता व धार्मिक सौहार्द की भावना ढूँढ ली जाए। कलम का ऐसा जादू हरिवंश राय बच्चन के अलावा और कहाँ देखने को मिलता है।उनका यही जादू “मधुशाला” के रूप में हमारे सामने आया....

आपको तो उनकी यह कविता भली-भांति पता होगी :-

अग्निपथ

वृक्ष हो भले खड़े, हो घने हो बड़े, एक पत छाव की |
मांग मत, मांग मत, मांग मत ||
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ |||

तू न थकेगा कभी, तू न थमेगा कभी, तू न मुड़ेगा कभी |
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ ||
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ |||

ये महान दृश्य है, चल रहा मनुष्य है, अश्रु स्वेद रक्त से |
लथपथ, लथपथ, लथपथ ||
अग्निपथ, अग्निपथ, अग्निपथ |||

उन्होंने सरलता और सहजता के साथ जीवन दर्शन को प्रस्तुत किया, गद्य और पद्य दोनों विधाओं पर समान अधिकार के साथ लेखनी चलाई।

क्रुद्ध नभ के वज्र दंतों
में उषा है मुसकराती,

घोर गर्जनमय गगन के
कंठ में खग पंक्ति गाती;
एक चिड़िया चोंच में तिनका
लिए जो जा रही है,
वह सहज में ही पवन
उंचास को नीचा दिखाती!
नाश के दुख से कभी
दबता नहीं निर्माण का सुख
प्रलय की निस्तब्धता से
सृष्टि का नव गान फिर-फिर!
नीड़ का निर्माण फिर-फिर,
नेह का आह्वान फिर-फिर!

प्रस्तुत कविता भी इसी आशावाद के बारे में है | हरिवंशरायजी के अनुसार हर पतन उत्थान का कारण होता है, हर रात के बाद सुबह का आगमन होता है | अतः निराश न होते हुए नए उमंग और उत्साह से चलते रहना ही जिन्दगी है |

कविता:-

आ रही रवि की सवारी
नवकिरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी |
विहग बंदी और चारण,
गा रहे हैं कीर्तिगायन,

छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फौज़ सारी |

आ रही रवि की सवारी |

चाहता उछलूँ विजय कह,

पर ठिठकता देखकर यह

रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी |

आ रही रवि की सवारी |

अनुच्छेद १:-

प्रथम अनुच्छेद में कवि प्रातः काल का वर्णन कर रहे हैं | सूर्य के आगमन से सृष्टि में परिवर्तन हो रहा है |

सूरज का रथ नव किरणों से सजा है | प्रातः काल की किरणों में कोमलता होती है, वे सुनहरे रंग की होती हैं | ये किरण आते ही सृष्टि को अपने सुनहरे रंग से भर देतीं हैं | सूरज के उगने से पहले ही आकर किरणें सूरज के आगमन की सूचना देती हैं अपनी आभा से सृष्टि के कण-कण में चेतना भर देती है | मानो ये किरणें सूरज के रथ की पताका हो जो दूर से ही सूरज के आगमन का संकेत देती हों | इसी कारण कवि कहते हैं कि सूरज का रथ इन्हीं न्विकर्नों से बना है, जो अपनी सुनहरी रोशनी से स्वर्ण-रथ का आभास निर्माण कर रही हैं |

सूर्योदय के साथ ही कलियाँ खिल जाती हैं.. बड़े उत्साह और आनन्द से वे सूरज के आगमन की प्रतिक्षा कराती हैं | इसी कारण ऐसा लगता है मानो सूरज का स्वागत करने के लिए यह सृष्टि फूलों से उसके पथ को सजाए हुए है |

राजा के रथ के पीछे हमेशा राजा के अनुचर (अनु=पीछे, चर=चलना) चलते हैं, ठीक उसी प्रकार से सूरज के रथ के पीछे बादल सूरज के अनुचर बनकर चल रहे हैं | उगते हुए सूरज के आभा के कारण बादलों का रंग सुनहरा हो जाता है, जिसे देखकर कवि कहते हैं कि मानो इन बादल रूपी अनुचरों ने सुनहरे रंग की पोशाक (वस्त्र) पहने हों |

इस प्रकार रवि अर्थात सूरज की सवारी पूरे ताम-झाम के साथ पूर्व दिशा की ओर से आ रही है | उसकी यह सवारी देखकर ऐसा लगता है मानो कोई राजा युध्द जीत कर आ रहा है |

अनुच्छेद २ :-

जब कोई राजा युध्द जीत कर आता है तब उसके पराक्रम का उसके कीर्ति का गायन बंदी और चारण गण किया करते हैं | प्रकाश और अन्धकार के इस युध्द में जीत प्रकाश की हुई है अर्थात सूरज की जीत हुई है , इसी कारण पक्षी अपने सुमधुर स्वर में सूर्य के पराक्रम का वर्णन गा रहे हैं और चहचहा रहे हैं |

सूरज की प्रथम किरण के साथ सृष्टि में चहल-पहल शुरू हो जाती है | जिस प्रकार फूल खिलते है उसी प्रकार से चिड़िया और अन्य पक्षी-गण चहचहाने लगते हैं | कवि ने इस दृश्य का वर्णन बड़ी खूबसूरती से किया है और पक्षियों को यहाँ दरबारी गायकों की उपमा दी है|

यह पक्षी रूपी बंदी और चारण गण सूर्य के किस पराक्रम का वर्णन कर रहे हैं? सूर्य के आते ही अन्धकार की तारक अर्थात तारों के रूप में जो सेना थी वह भाग गई है | यह सेना सूर्य के पराक्रम का तेज सहन नहीं कर पाई और युध्द-भूमि से भाग गई |

सूरज के आते ही अँधेरा चला जाता है.. तारें छिप जाते हैं | इसी सत्य को अत्यंत सुंदर कल्पना में संजोकर कवि हमारे सामने लाते हैं.. कवि कहते हैं कि मानो सूर्य रूपी राजा के पराक्रम के कारण तारों के रूप में अँधेरे की सेना युध्द भूमि से तितर-बितर हो गई है |

अनुच्छेद ३ :-

सूरज की अन्धकार पर विजय के कारण संपूर्ण सृष्टि ही मानो उत्सव मना रही है | सूर्य देव भी चाहते हैं कि वे विजय की इस खुशी वे व्यक्त करें ... लेकिन जैसे ही वे यह आनन्द व्यक्त करना चाहते हैं उनकी नजर रात के राजा अर्थात चंद्रमा पर पडती है जो अब भिखारी बना कर

बैठा है | सूरज सोचता है कि जो आज चन्द्रमा के साथ हुआ है शायद मेरे साथ भी हो सकता है, क्योंकि जीवन पहिए के समान गोल घूमता है जो आज गया वह लौट के जरुर आएगा | जो चन्देमा के साथ हुआ मेरे साथ भी हो सकता है | इसी कारण उसे देखकर सूरज ठिठकर रहा जाता हैं, स्तब्ध रह जाता हैं |

रात-भर अपने रौब में रहने वाला अपनी मस्ती से चलने वाला चाँद सूरज के आते ही निष्प्रभ हो जाता है | उसका अस्तित्व खत्म हो जाता है | और सूरज की विजय यात्रा के सामने वह सिर को झुकाए अपनी हार का स्वीकार करते हुए खडा है |

कवि इस अनुच्छेद तक आते-आते जीवन के एक महत्वपूर्ण सत्य की ओर हमें ले जाते हैं..

हर रात की सुबह होती है तथा दुखों के बाद खुशियाँ आती ही है | इसी कारण हमें हार से या दुखों से नहीं डरना चाहिए हमारी हिम्मत नहीं खोनी चाहिए और जीत के लिए सदैव प्रयत्नरत रहना चाहिए |

सूरज भी रात भर अंधरों से लडकर सूबह अपनी जीत का उत्सव मनाता है | सोचो सगर सूरज हार मान गया तो क्या होगा ....

जीवन में संघर्ष अटल है.. संघर्षों से डरना है या लड़ना है यह हम पर निर्भर करता है |

सूरज हर रोज सुबह अपनी विजय यात्रा से मानो हमें यही संदेश देता है |

उद्देश्य:-

हरिवंश राय “बच्चन” अपने अलग विचारों से हिन्दी साहित्य जगत में काफी प्रसिध्द है | उनकी यह कविता भी इसी अलग विचार को प्रस्तुत करती है |

यह कविता मात्र प्रातः काल का वर्णन नहीं है अपितु इस वर्णन के साथ ही उन्होंने हमें महत्वपूर्ण संदेश दिया है |

- जीवन संघर्ष का नाम है, हम तभी विजयी हो सकते हैं जब हम इस विश्वास के साथ लडे कि जीत आखिर हमारी होगी | जिस प्रकार सूरज रात-भर अँधेरे से लड़ता है और अंत में विजयी होता है उसी प्रकार हमें भी न सिर्फ अपने जीवन के अंधकार से अपितु समाज में

व्याप्त अन्धकार से भी लड़ना होगा | तभी हमारे जीवन में सुनहरी सुबह का उदय हो सकता है |

- दूसरी बात जो इस कविता द्वारा कवि हमारा ध्यान इस ओर खींचना चाहते है कि समय परिवर्तनशील है, जो आज है शायद कल न हो.. जो आज राजा है वह कल भिखारी भी हो सकता है | जिस प्रकार सूरज की विजय के बाद रात का राजा चन्द्रमा भिखारी बन गया, हो सकता है कि समय एक-सा न रहे.... इसी कारण चन्द्रमा पर हंसने से पहले सूरज ठिठककर रह गया |

पुष्टि-धन :-

हमारे वेदों में भी हमें सूर्योदय का वर्णन मिलता है,

ये ज्योतिर्मयी रश्मियाँ सम्पूर्ण प्राणियों के ज्ञाता सूर्यदेव को एवं समस्त विश्व को दृष्टि प्रदान करने के लिए विशेष रूप से प्रकाशित होती हैं॥१॥
सबको प्रकाश देने वाले सूर्यदेव के उदित होते ही रात्रि के साथ तारा मण्डल वैसे ही छिप जाते है, जैसे चोर छिप जाते है॥२॥
जिस दृष्टि अर्थात प्रकाश से आप प्राणियों को धारण-पोषण करने वाले इस लोक को प्रकाशित करते हैं, हम उस प्रकाश की स्तुति करतें हैं॥६॥

चलिए हम एक और ऐसी ही कविता पढ़ते हैं, इस कविता के कवि हैं “जयशंकर प्रसाद”

बीती विभावरी जाग री!
अम्बर पनघट में डुबो रही-
तारा-घट ऊषा नागरी।

खग-कुल कुल-कुल-सा बोल रहा,

किसलय का अंचल डोल रहा,
लो यह लतिका भी भर लाई-
मधु मुकुल नवल रस गागरी।

अधरों में राग अमंद पिए,
अलकों में मलयज बंद किए-
तू अब तक सोई है आली!
आँखों में भरे विहाग री।

मूल्यांकन

१. सूरज का पथ किससे सजा है ?

अ. फूल और कलियों से

आ. मोतियों से

इ. चांदी से

ई. पत्थरों से

२. सूरज के कीर्ति का गायन कौन कर रहा है?

अ. सारे गायक

आ. पक्षी

इ. गाँव के लोग

ई. पेड़-पौधे

३. सूरज को देखकर कौन भाग गए ?

अ. तारें रूपी सैना

आ. बादलों का समूह

इ. पशू का दल

ई. गाँव के लोग

४. राह में कौन भिखारी बनकर बैठा है?

अ. चन्द्रमा

आ. तारें

इ. ग्रह

ई. नक्षत्र

Worksheet

१. रवि की सवारी किस प्रकार आ रही है?

२. सूरज का पथ किसने सजाया है?

३. सूरज का कीर्ति गायन कौन गा रहें हैं?क्यों?

४. सूर्योदय के समय सृष्टि में क्या-क्या परिवर्तन हो रहें हैं कविता के आधार पर स्पष्ट करे |

५. आपके विचार से रात का राजा कौन है तथा वह राह में भिखारी बनकर क्यों खड़ा है ?

६. आपके अनुसार इस वास्तविक अर्थ क्या है?

७. हमारे आस-पास ऐसे अनेक लोग होते हैं जिन्होंने समाज के हित के लिए संघर्ष किया है, वे हमारे समाज का सूरज है | आपको ऐसे ही किसी एक “सूरज” की कहानी लिखनी है|

८. समाज का सूरज बनने के लिए आप क्या कर सकते हैं? अपने विचारों को प्रकट करें |

परियोजना (activity oer)

यह सामुहिक परियोजना है | छात्रों समाज का निरीक्षण करना होगा तथा इस समाज में फैली बुराइयों को दूर करने के उपायों को प्रत्यक्ष में लाने का प्रयास करना होगा |